रोम का लोहार

कोलंबा कालीधर

रोम में एक बहुत प्रसिद्ध लोहार हुआ। उसकी प्रसिद्धि सारी दुनिया में थी, क्योंकि वो जो भी बनाता था, वो चीज़ बेजोड़ होती थी। उस लोहार की दुकान पर बनी तलवार का कोई सानी न था। और उस लोहार की दुकान पर बने सामानों का सारे जगत में आदर था। दूर-दूर के बज़ारों में उसकी चीज़ें बिकती थीं, उसका नाम बिकता था।

फिर रोम पर हमला हुआ। और रोम में जितने प्रतिष्ठित लोग थे, पकड़ लिए गए। रोम हार गया। वो लोहार भी पकड़ लिया गया। वो तो काफ़ी ख़्यातिलब्ध आदमी था। उसके बड़े कारख़ाने थे। और उसके पास बड़ी धन-सम्पति थी, बड़ी प्रतिष्ठा थी। वो भी पकड़ लिया गया।

तीस, रोम के प्रतिष्ठित, जो सर्वशक्तिशाली आदमी थे, उनको पकड़ के दुश्मनों ने ज़ंजीरों और बेड़ियों में बाँध के पहाड़ों में फेंक दिया, मरने के लिए।

जो उनतीस थे, वो तो रो रहे थे, लेकिन वो लोहार शान्त था। आख़िर उन उनतीसों ने पूछा कि, "तुम शान्त हो, हमें फेंका जा रहा है, जंगली जानवरों को खाने के लिए!"

उसने कहा, "फ़िक्र मत करो, मैं हूँ, मैं लोहार हूँ। जिन्दगी भर मैंने बेड़ियाँ और हथकड़ियाँ बनाई हैं, मैं खोलना भी जानता हूँ। तुम घबड़ाओ मत। एक दफ़ा इनको फेंक के चले जाने दो, मैं ख़ुद भी छूट जाऊँगा, तुम्हें भी छोड़ लूँगा। तुम डरो मत।"

तो लोगों की हिम्मत आ गई, आशा आ गई। बात तो सच थी, उससे बड़ा कोई कारीगर न था। ज़रूर, जिन्दगी भर लोहे के साथ ही खेल खेला है, तो ज़ंजीरें न खोल सकेगा! खोल लेगा। ये बात भरोसे की थी।

फिर दुश्मन उन्हें फेंक कर गड्ढ़ों में, चले गए। वे सब घिसट के किसी तरह उस लोहार के पास पहुँचे। पर वो लोहार रो रहा था। उन्होंने पूछा कि, "मामला क्या है? तुम, और रो रहे हो? और हमने तो तुम पे भरोसा किया था। और हम तो तुम्हारी आशा से जीते रहे अब तक। हम तो मर ही गए होते। तुम क्यों रो रहे हो? हुआ क्या? अब तक तो तुम प्रसन्न थे!"

उसने कहा कि, "मैं रो रहा हूँ इसलिए कि मैंने जब ग़ौर से अपनी ज़ंजीरें देखीं तो उन पे मेरे हस्ताक्षर हैं, वो मेरी ही बनाई हुई हैं। मेरी बनाई ज़ंजीरें तो टूट ही नहीं सकतीं। ये किसी और की बनाई होतीं तो मैंने तोड़ दी होतीं। लेकिन यही तो मेरी कुशलता है कि मेरी बनाई ज़ंजीर टूट ही नहीं सकती। असम्भव। ये नहीं हो सकता। मरना ही होगा।"

उस लोहार की कहानी जब मैंने पढ़ी तो मुझे याद आया, ये तो हर संसारी आदमी की कहानी है। आखिर में तुम एक दिन पाओगे कि तुम्हारी ही ज़ंजीरों में फँस के तुम मर गए। तुमने बड़ी कुशलता से उनको ढाला था। तुम्हारे हस्ताक्षर उन पर हैं। तुम भली-भाँति पहचान लोगे कि ये अपने ही हाथ का जाल है। इस पूरे सिद्धान्त का नाम कर्म है। तुम ही बनाते हो। तुम्हीं ये सीख़चे ढालते हो। तुम्हीं ये पिंजड़े बनाते हो। फिर कब तुम इसमें बन्द हो जाते हो, कब द्वार गिर जाता है, कब ताले पड़ जाते हैं, तुम्हें समझ में नहीं आता। ताले भी तुम्हारे बनाए हुए हैं। शायद तुमने किसी और कारण से दरवाज़ा लगा लिया था... सुरक्षा के लिए। लेकिन अब खुलता नहीं। शायद हाथ में तुमने ज़ंजीरें पहन ली थीं, आभूषण समझ के। अब जब पहचान आई है तो अब खुलती नहीं, क्योंकि आभूषण तो नहीं, ज़ंजीरें थीं।

मेवला महाराजपुर.....

पेज एक का शेष

बेवकूफ़ नहीं रह गयी है, वह नेताओं की इस संकीर्ण सोच को बखूबी समझती है और समय आने पर इसका यथोचित जवाब भी देती है।

तीन बरस में रेलवे अंडरपास बना नहीं, लागत बढती जा रही है

करीब दो वर्ष पूर्व, राजमार्ग को मेवला महाराजपुर से सीधे जोड़ने हेतु रेलवे अंडरपास का सबसे महत्वपूर्ण निर्माण कार्य रेलवे ने पूरा कर छोड़ा था। यानी चलती रेलवे लाइन के नीचे लेंटर डालने का जो असली एवं कठिनतम काम है वह रेलवे ने समय पूर्व ही पूरा कर दिया था। उसके बाद निकम्मी हरियाणा सरकार के चोर इन्जीनियरों से दोनों ओर के रैंप नहीं बन सके दो साल में। दोनों साइड के रैंप खोद कर छोड़ रखे हैं। उनकी सड़क व दोनों ओर की दीवारें इन से नहीं बन पा रही हैं। एक बार में तो इन चोरों से डिज़ाइन तक सही नहीं बन पाते। बार-बार डिज़ाइन में फ़ेर बदल करते रहते हैं।

इसी चक्कर में इसका प्रारम्भिक बजट 11 करोड़ से बढ कर अब 20 करोड़ से भी अधिक हो गया है। गौरतलब बात यह है कि यह बजट केवल दोनों साइड रैम्प का है न कि रेलवे लाइन के नीचे लगे लेंटर का। शहर के लोग शायद भूले नहीं होंगे कि ओल्ड फ़रीदाबाद चौक से एनआईटी को जोड़ने वाला अंडरपास के निर्माण में भी चोर इन्जीनियरों ने ऐसा ही ड्रामा करते हुये काम पूरा करने में 6 वर्ष से अधिक का समय लगाया था और बजट भी बेतहाशा बढाते रहे थे। उसके बावजूद भी काम निहायत ही घटिया एवं त्रुटिपूर्ण हुआ। चार बूंद बारिश की बरसते ही इसमें वाहन डूबने लगते हैं। अब देखना है कि मेवला महाराजपुर वाले अंडरपास में ये 'हूडा' विभाग के चोर क्या गुल खिलाते हैं।

सुधी पाठकों से अपील

31 वर्षों से 'मज़दूर मोर्चा' वैकल्पिक मीडिया के तौर पर अपने सुधी पाठकों को वह समाचार, विचार एवं जन उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करता आ रहा है जिसे अन्य मीडिया छिपाने का प्रयास करता है। सुधी पाठक इतना तो समझ ही गये होंगे कि यह छोटा सा अखबार किसी भी राजनीतिक अथवा व्यवसायिक धड़े से जुड़ा नहीं है। जनहित में जो भी प्रकाशित करने लायक सामग्री हो पाती है उसे लोग़ों तक पहुंचाने का प्रयास किया जाता है।

बिना विज्ञापनों के, केवल पाठकों के सहयोग से चलने वाला यह छोटा सा अखबार आपको और अधिक बेहतर व निरंतर सेवा देता रहे इसके लिये आप से निवेदन है कि इसमें अपना आर्थिक सहयोग अवश्य प्रदान करें। 'मज़दूर मोर्चा' नियमित रूप से खरीदकर पढ़ने वाले पाठक तो अपना योगदान दे ही रहे हैं, इलेक्ट्रोनिक माध्यम से अखबार पढ़ने वाले पाठकों से विशेष अनुरोध है कि वे भी इसमें अपना आर्थिक सहयोग प्रदान करें। वार्षिक सहयोग के तौर पर 100 रुपये, 500 रुपये, 1000 रुपये की धनराशि सामर्थ्य अनुसार 'मज़दूर मोर्चा' के निम्नलिखित खाते में डाले जा सकते हैं।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी भी शाखा में
खाता संख्या : 451102010004150
IFSC CODE : UBIN0545112

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5
2. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
4. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे
5. राम खिलावन बल्लबगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने
6. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास
7. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207

गतांक की चीर-फ़ाड़

गौहत्या में तुरंत कार्यवाही लेकिन इंस्पैक्टर हत्या ठंडे बस्ते में

डॉ. जुगल किशोर गुप्ता

मज़दूर मोर्चा के 09-15 दिसम्बर 2018 के अंक में राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक ज्वलंत मुद्दों पर अनेक समाचार प्रकाशित हुये हैं। राष्ट्रीय सेवक संघ (आरएसएस) सदैव इस प्रयत्न में रहता है कि देश में साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण किया जाए और जहां भी हिंदू-मुस्लिम सद्भाव मौजूद है उनमें साम्प्रदायिक तनाव फ़ैलाया जाए। गुजरात के बाद उत्तर प्रदेश को हिन्दुत्व की प्रयोगशाला बनाना उनका ध्येय रहा है। यूपी अक्सर साम्प्रदायिक तनाव का शिकार बनता रहता है। बुलंदशहर के दरियापुर और स्याना हिंदू-मुस्लिम एकता के केन्द्र रहे हैं जिससे आरएसएस परेशान था। स्याना से 45-50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित दरियापुर में एक दिसम्बर को मुसलमानों के तबलीगी इज्तमा का आयोजन किया गया था जिसमें कई लाख मुसलमान पहुंच चुके थे। इस सम्मेलन के आयोजन की खबर आरएसएस को मिलने पर साम्प्रदायिक हिंसा भड़काने की योजना बनाई गई।

स्याना के एक कॉलेज में आरएसएस के तमाम फ्रंटल संगठनों की कई बैठकें हुई, जिनका नेतृत्व मुख्य आरोपी बजरंग दल का ज़िला प्रमुख योगेश राज और भारतीय जनता युवा मोर्चा का नेता शिखर अग्रवाल कर रहे थे। उन्होंने गौ-हत्या को आधार बनाकर बड़े पैमाने पर हिंदू-मुस्लिम दंगा कराने और यूपी को गुजरात बनाने का षडयंत्र रचा, जिसका 'बुलंद शहर में इंस्पैक्टर की शहादत ने आरएसएस के मंसूबे को किया नाकाम, यूपी को गुजरात बनाने की तैयारी-आपको तथाकथित राष्ट्रीय मीडिया में इस घटना के इतने तथ्य पढ़ने को नहीं मिलेंगे', 'या तो सत्ता के तंत्र के साथ रहो या फ़िर मारे जाओगे', 'चुनावी लाभ के लिये बुलंदशहर को दंगों की आग में झोंकने की साजिश वाले बजरंग दल के कर्ता-धर्ता को बचाने में जुटे हैं यूपी पुलिस के बड़े अधिकारी' तथा 'रविश का पत्र दिवंगत पुलिस आफ़िसर के नाम' में कच्चा चिट्ठा खोला गया है।

इस साम्प्रदसयिक राजनीतिक षडयंत्र के कई पहलू उभर कर सामने आये हैं। स्याना के महाब गांव के खेतों में पशुओं को काटकर अवशेष गन्ने के खेत में लटकाये गए थे जो दूर से ही दिखाई देते थे। यक्ष प्रश्न है कि अगर कोई गौकशी करेगा तो वह इसे छिपाने का प्रयत्न करेगा, न कि खेतों में लटकाकर दिखाएगा। इज्तेमा के लिये इकट्ठे हुए मुसलमानों में से बड़ी तादाद में उन्हें स्याना के रास्ते से होकर लौटना था, जहां हिन्दू महाब गांव के खेतों में कटे अवशेषों को देखकर आक्रोश में आकर वहां से गुजर रहे मुसलमानों पर हमला कर देते और पूरे प्रदेश में हिंसा की आग फ़ैल जाती जिसे संघ परिवार ने 2019 के लोकसभा चुनाव तक जारी रखना था। परंतु स्याना के इंस्पैक्टर सुबोध कुमार सिंह राठौर ने बड़ी सूझ-बूझ से मुसलमानों को दूसरे रास्ते से भेज दिया और आरएसएस के नापाक मंसूबे को नाकाम कर दिया। गौरतलब है कि हिंदुत्ववादी संगठन कोतवाल सुबोध कुमार से अखलाक की हत्या की जांच का सत्तानुकूल न करने के कारण भी नाराज थे। इलाके के भाजपा विधायक व सांसद गौकशी की शिकायत कर आरोप लगा रहे थे कि पुलिस कोई कार्यवाई नहीं कर रही है। योगेश राज व शिखर अग्रवाल ने लोगों को सूचना देकर भीड़ कर ली और भीड़ ने हमला कर दिया। इंस्पैटर सुबोध कुमार की हत्या कर दी गई तथा थाने को जला दिया। पुलिस ने एक बार तो फुर्ती दिखाई, परन्तु आरोपित अपराधियों के विरुद्ध कोई कार्यवाई नहीं की। कल तक पुलिस सत्ता विरोधियों को निशाने पर ले रही थी तो अब पुलिस वाले का मॉब लिंचिंग में एनकाउंटर हो गया क्योंकि वह सत्ता की धारा के विपरीत जा रहा था।

यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्रेस रिलीज में कहा है कि गौहत्या में शामिल लोगों के विरुद्ध तुरंत कार्यवाई की जाए, परंतु हैरानी रही कि योगी ने यह नहीं कहा कि इंस्पैक्टर सुबोध कुमार के हत्यारों को 2-घंटों में पकड़कर हाजिर किया जाए। ने डायरेक्टर जनरल पुलिस व मेरठ रेंज के एडीजीपी समेत सभी इस कांड के पीछे लिप्त वास्तविक अपराधियों के विरुद्ध कोई कार्यवाई करना तो दूर वे उनके संगठन का नाम लेने से ही बच रहे थे जिससे उनकी बुज़दिली नज़र आ रही थी। इससे भी ऊपर योगी जी ने बयान दिया कि यह एक हादसा था, मॉब लिंचिंग नहीं। फ़ौजी जितेन्द्र मलिक उर्फ़ जीतू को पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया, परंतु उसका कहना है कि इस हत्या कांड में उसका कोई हाथ नहीं है, जबकि पुलिस उसे इस कांड में बलि का बकरा बनाने के प्रयास में लगी है और गौ-हत्या के मामले में गांव के निर्दोष व्यक्तियों को पकड़ने में लगी है। राजनीतिक साम्प्रदायिक षडयंत्र का यह एक ज्वलंत उदाहरण है जिसमें राजनीतिक लाभ लेने के लिये सरे आम दंगे भड़काने और एक पुलिस अफ़सर के कातिल अपराधी को सत्ता व प्रशासन द्वारा बचाया जा रहा है। हिन्दुत्ववादी संगठन बेखौफ़ हैं और सक्रिय हैं, क्योंकि उनके अपराध को अपराध नहीं माना जाएगा।

दिल्ली के सरकारी स्कूलों में क्लासरूम और आधारभूत संरचना में उल्लेखनीय कार्य किया गया है, जोकि आम आदमी पार्टी के केजरीवाल सरकार की देन है जबकि पड़ोसी राज्य हरियाणा इन सुविधाओं से वंचित है, जिसकी 'केजरीवाल के स्कूल-नया प्रयोग लेकिन अभी बाकि है पुराना रोग' में विवेचना की गई है। अच्छी आधारभूत संरचना का निर्माण कर अच्छी शरूआत की है, जबकि केजरीवाल सरकार द्वारा स्थाई शिक्षकों व गेस्ट टीचर्स की सेवा शर्तों में भेदभाव किया जाता है। कहने को तो गेस्ट टीचर का न्यूनतम वेतन30,00 रुपया मासिक है, परंतु यह उन्हें प्रतिदिन के हिसाब से दिया जाता है। रविवार, दो शनिवार और छुट्टी का वेतन कट जाता है, जिससे किसी भी गेस्ट टीचर को कभी भी पूरे 30,000 नहीं मिलते जिसको लेकट गेस्ट टीचर्स में भारी असंतोष है।

मुख्यमंत्री योगी ने राजस्थान विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान हनुमान को दलित बताकर आरएसएस के ही विचार को आदिवासी इलाकों से निकालकर व्यापक स्तर पर दलित वर्गों से जोड़ने की राजनीति की है, जिसकी 'हनुमान बनाम दलित की इस नई राजनीति का मक़सद क्या है? 'में सटीक विश्लेषण किया गया है। हनुमान को दलित कहे जाने का एक तरफ़ ब्राह्मण विरोध कर रहे हैं तो दूसरी तरफ़ दलित वर्ग हनुमान मंदिरों पर अपना दावा ठोक रहा है। यूपी के दलितों ने कई शहरों में हनुमान मंदिरों पर अपना कब्जा करने की कोशिश की तो हरियाणा के बल्लबगढ में दलितों द्वारा वहां के हनुमान मंदिर पर कब्जा करने की घोषणा करने पर हनुमान मंदिर की रक्षा के लिये पुलिस की व्यवस्था करनी पड़ी, जिसका 'हनुमान मंदिर की रक्षा भी पुलिस के जिम्मे' में खुलासा किया गया है।

गुजरात में जब नरेन्द्र मोदी मंख्यमंत्री और अमितशाह गृह मंत्री थे, उस समय वहां 2002-2006 के दौरान पुलिस ने कई फ़र्जी मुठभेड़ों में मुस्लिम नौजवानों को मार दिया था, जिनमें से 24 फ़र्जी मुठभेड़ों की जांच के लिये सुप्रीम कोर्ट के सेवानिवृत न्यायाधीश एच.एस.बेदी के नेतृत्व में नियुक्त जांच कमेटी की रिपोर्ट की सुनवाई के लिये मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगई ने 12 दिसम्बर निर्धारित की है, जिसको ''सुप्रीम कोर्ट में 'गुजरात फ़ाइल्स' खौफ़'' में उजागर किया गया है जिससे मोदी जी, शाह व गुजरात सरकार के तत्कालीन वकील व केन्द्र सरकार के वर्तमान अटार्नी जनरल तुषार मेहता की बेचैनी बढ गई है।

राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलांगना व मिजोरम में हुए हालिया विधानसभा चुनाव में प्रधानमंत्री मोदी, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह तथा यूपी के मुख्यमंत्री योगी ने चुनावी सभाओं में जुमलेबाज़ी करने, जी भरकर झूठ बोलने, साम्प्रदायिकता फैलाने, राममंदिर के नाम से ध्रुवीकरण करने आदि का प्रयास किया, जिसकी 'पांच राज्यों में मोदी अमित की रैलियां काम न आई भाजपा ने मुंह की खाई' में चर्चा की गई है। घोषित परिणामों से स्पष्ट है कि मोदी-शाह योगी की रैलियां काम नहीं आई। भाजपा की इस पराजय से मोदी की अपराजेय तथा शाह की कुशल रणनीतिकार व राजनीति के चाणक्य होने की धारणा को गहरा धक्का लगा है।

गौ-हत्या के नाम पर स्याना के पुलिस इंस्पैक्टर सुबोध कुमार सिंह राठौर की हिंदुत्ववादी संगठनों द्वारा मॉब लिंचिंग में हत्या करने पर 'बुलंदशहर' तथा 'यूपी: दंगाइयों ने पुलिस अधिकारी को गोली मारी-कानून हाथ में नहीं लेना है-कानून तो जीप में था, हमारे हाथ में तो गन थी' मोदी सरकार द्वारा नोटबंदी की घोषणा के बाद लोग़ों द्वारा अपने पैसे निकालने के लिये एटीएम के बाहर खड़ी लंबी कतार पर 'कदम सरकार ने उठाए पैर हमारे दुख रहे हैं' और यूपी के योगी मुख्यमंत्री द्वारा हनुमान को दलित कहने पर 'प्रभु ये भाजपा वाले मुझे दलित कह रहे हैं हनुमान इन्होंने सत्ता के लिये मुझे भी नहीं छोड़ा-मैं समझ गया प्रभु इनकी लंका दहन का समय आ गया है-जय श्री राम' कार्टूनों द्वारा उपयुक्त तंज कसा गया है।